मोरंगे

नवम्बर–दिसम्बर 2017

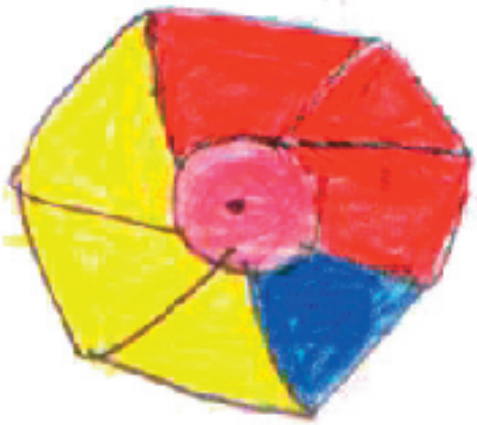

इस बार

खिड़की

3 एक दोस्त साँप

कविताएँ

7 मैं आम हूँ

8 मेरा काम

9 रसगुल्लों की बारिश / बारिश

10 तोता

कहानियाँ

11 लाख–लाख शुक्रिया

12 शेर की दोस्त

13 बंदर भाग गया

14 सपना

15 जंगल की सैर

याद की धूप–छाँव में

16 काम बन गया

बात लै चीत लै

19 सौतेली माँ

21 मटरगश्ती बड़ी सस्ती

22 हीहीही–ठीठीठी

23 कुछ हमने बढ़ायी

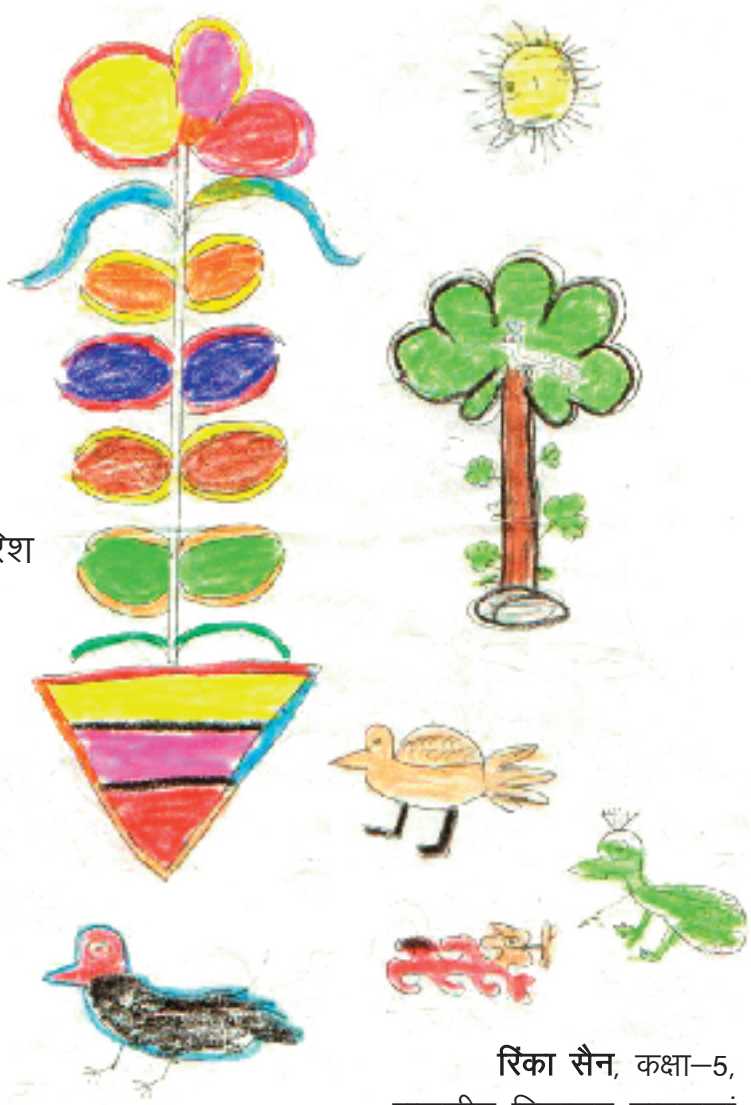

रिंका सैन, कक्षा–5,
राजकीय विद्यालय मायकलां

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जीवनेद्र सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – मनीष, गांव–खवा
वर्ष 8 अंक 87–88

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

एक दोस्त साँप

दुष्यंत सिंह, गांव–रावल

एक जंगल था। उस जंगल में एक बहुत बड़ा और घना पेड़ था। उस पेड़ की शाखायें दूर–दूर तक फैली हुई थी। उन शाखाओं पर अनेक पक्षी अपना घोंसला बनाकर रहते थे।

एक ऊँची डाल पर कौए का जोड़ा घोंसला बनाकर रहता था। उसके पास ही, अन्य डाल पर, नन्हीं गोरैया भी अपने बच्चों के साथ रहती थी। एक तरफ हरियल तोता अपने झुंड के साथ दिन–रात टाँय–टाँय करता रहता था, तो दूसरी तरफ सुरीली मैना सुबह–शाम मीठे स्वर में गीत गाती थी। इस तरह कितनी ही जानी–अनजानी चिड़ियाँ उस पेड़ पर अपना घोंसला बनाकर मिल जुलकर रहती थीं।

उस पेड़ के तने में एक कोटर था। उस कोटर में एक बूढ़ा उल्लू रहता था। वह उल्लू जितना बूढ़ा था, उतना ही ज्ञानी और चतुर भी था। सारी चिड़ियाँ उसका बड़ा आदर करती थीं और उसे उल्लू दादा कहकर बुलाती थी।

एक दिन सुबह–सवेरे जब चिड़ियाँ अपने घोंसले से निकलकर दाना चुगने के लिए जाने लगीं, तो उन्होंनें देखा कि एक लंबा साँप रेंगता हुआ उनके पेड़ की तरफ चला आ रहा है। साँप को देखकर वे सब डर गई। जो जहाँ थी, वहीं रूक गई और साँस रोककर देखने लगी कि वह साँप कहाँ जा रहा है।

साँप रेंगता हुआ उसी पेड़ के नीचे आया और उसकी जड़ में बने एक बिल में समा गया। यह देखकर उन चिड़ियों के होश उड़ गए।

''हमारे इतने निकट साँप का यूँ रहना खतरे से खाली नहीं है,'' नन्हीं गोरैया बोली।

''हमारे जाने के बाद यह साँप अवश्य हमारे घोंसलों में जाकर हमारे अंडे खा जाया करेगा,'' एक चिड़िया बोली।

''सांप तो अपने अंडे तक खा जाता है। फिर भला वह हमारे अंडे क्यों छोड़ेगा,'' कालू कौवा चिंतित स्वर में बोला।

''पर हम करें क्या? इस साँप को भगाना तो हमारे बस की बात नहीं। चलो, उल्लू दादा को चलकर बताएं। वही कोई न कोई तरीका ढूंढ़ेंगे,'' हरियल तोते ने अपनी लंबी पूंछ हिलाते हुए कहा।

सब चिड़ियाँ उड़कर उल्लू के कोटर के आसपास बैठ गईं। उनकी चीं–चीं, चूं–चूं, कांव–कांव, टांय–टांय उल्लू दादा ने सुन ली थी। उसने अपना सिर कोटर से बाहर निकाला और पूछा, ''क्या बात है तुम सब इतनी घबराई हुई क्यों हो?''

चिड़ियों ने उल्लू दादा को सारी बात बताई और साँप से छुटकारा पाने का उपाय पूछा।

उल्लू थोड़ी देर चुप रहा, जैसे कुछ सोच रहा हो, फिर बोला, ''देखो, साँप को भगाना बहुत मुश्किल काम है। फिर अभी तो वह आया ही है। कुछ दिन देखते हैं कि उसका बर्ताव कैसा रहता है। तब तक इसे भगाने की कोई तरकीब अवश्य ही निकल आएगी। हाँ, तुम लोग पेड़ को अकेला मत छोड़ना। कोई न कोई हमेशा रखवाली करता रहे। मैं भी चौकसी रखूंगा।''

चिड़िया वापस तो चली गई, लेकिन वे बहुत उदास थीं। पहले दिन कुछ नहीं हुआ। दूसरे दिन भी सब ठीक–ठाक रहा। ऐसे ही कुछ दिन बीत गए। साँप अधिकतर अपने बिल में ही रहता। सुबह–शाम बिल से बाहर आता और घूम–घामकर फिर से बिल घुस जाता।

''देखा,'' उल्लू दादा चिड़ियों से कहता, ''तुम लोग तो यूँ ही परेशान थे। वह साँप तो बहुत शरीफ लगता है। मैं तो यह कहूंगा कि तुम लोग उसके साथ दोस्ती कर लो।''

लेकिन चिड़ियाँ उसके लिए राजी नहीं हुई। हाँ उन्होंने अब पेड़ की रखवाली करना छोड़ दिया था और पहले की ही तरह दाना चुगने जाने लगी थीं। धीरे–धीरे साँप के पड़ोस में होने की उन्हें आदत पड़ गई।

एक दिन शाम को अचानक उस पेड़ के ऊपर चीं–चीं और कांव–कांव का शोर

मचने लगा।

''अब क्या हुआ?'' उल्लू ने कोटर से सिर निकालकर पूछा।

''आज हमने आदमियों को जंगल में पेड़ काटते हुए देखा है। वे बड़े–बड़े पेड़ों को ही काट रहे थे,'' चिड़ियों ने बताया।

''हमारा पेड़ भी तो बड़ा और घना है। इसे तो वे जरूर ही काटेंगे,'' मैना बोली।

''हे भगवान, तब हम कहाँ रहेंगे। मेरे तो बच्चे भी अभी अंडों से बाहर नहीं आए हैं,'' कौवी रोते–रोते कहने लगी।

''अरे, ये पेड़ तो हमारा घर है। वे हमारा घर क्यों उजाड़ रहे हैं? हम तो उनके घरों को नुकसान नहीं पहुँचाते,'' बुलबुल ने कहा।

''वे बेवकूफ हैं, इसलिए,'' उल्लू ने दुःखी होकर कहा, ''उन्हें शायद यह नहीं मालूम है कि ये पेड़ ही तो उनकी धरती को हरा–भरा रखते हैं। अगर वे इन्हें ही काट देंगे तो उनकी यह हरी–भरी धरती रेगिस्तान बन जायेगी।''

''अपने किए की सजा तो वे भुगत ही लेंगे, लेकिन हम कैसे इस मुसीबत से छुटकारा पाएं? कल सवेरे तक वे हमारे पेड़ तक पहुँच जाएंगे,'' लंबी पूंछ वाला हरियल तोता बोला।

उल्लू दादा चुपचाप कुछ सोचता रहा। उसे भी इस आफत से बचने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। 'सचमुच अगर यह पेड़ कट गया, तो चिड़ियों की यह इतनी बड़ी बिरादरी कहाँ जाएगी?' उसने सोचा।

लेकिन जब उसने चिड़ियों के उतरे हुए मुँह देखे तो ढाँढ़स बंधाता हुआ बोला, ''तुम लोग घबराओ नहीं। अपने–अपने घोंसलों में जाओ। कल सुबह तक कोई न कोई उपाय जरूर निकल आएगा।''

चिड़िया अपने–अपने घोंसलों में चली गई, लेकिन वे बेचैन रहीं। रातभर कोई

रामभजन बैरवा,
उम्र–10 वर्ष, समूह–सूरज

सोया नहीं। सबको एक ही चिंता थी कि पेड़ के कट जाने पर वे कहाँ जाएंगे। इतने दिनों से साथ रहते–रहते सब चिड़ियाँ एक–दूसरे से खूब घुल–मिल गई थीं। अब बिछुड़ने की बात वे सोच भी नहीं पा रही थीं।

आखिर काली–लंबी रात बीत गई और भोर की लाली पूर्व दिशा में फैलने लगी। उस दिन कोई भी दाना चुगने बाहर नहीं गया। वे रह–रहकर उल्लू दादा के कोटर की तरफ देखतीं, लेकिन आज तो उल्लू दादा अभी से अंदर घुस गए थे। सांप भी आज सुबह की सैर के लिए नहीं निकला था।

कुछ चिड़ियाँ आकाश में घूम–घूमकर देखने लगीं कि पेड़ काटने वाले आदमी आ रहे हैं कि नहीं। जैसे–जैसे उन्हें आने में देर हो रही थी, चिड़ियों के मन में आशा की किरण जाग रही थी कि शायद आदमी नहीं आएंगे। शायद उन्हें सद्‌बुद्धि आ गई होगी और वे जंगल में पेड़ काटना छोड़ देंगे।

तभी शोर मचा, ''आदमी आ रहे है, वे आ रहे हैं।'' सब चिड़ियाँ घोसलों से निकलकर बाहर उड़ने लगीं। चूं–चूं, चीं–चीं और कांव–कांव के शोर से जंगल गूंज उठा। उल्लू भी कोटर से बाहर झांकने लगा। थोड़ी देर में आदमी पेड़ तक आ पहुंचे। उन्होने जब उस बड़े पेड़ और उसकी फैली हुई मोटी–मोटी शाखाओं को देखा, तो वे वहीं रूक गए। ''यह पेड़ बढ़िया है। इससे बहुत लकड़ी मिलेगी,'' उनमें से एक बोला। उन्होंने अपनी कुल्हाड़ी–आरी उठाई और पेड़ की तरफ बढ़ने लगे। तभी अचानक पेड़ की जड़ में बने बिल से एक लंबा–काला साँप सरसराता हुबा बाहर निकला। फुंकारता हुआ वह उन दोनों आदमियों की तरफ बढ़ा। उन आदमियों के होष उड़ गए। वे वहाँ से भाग खड़े हुए।

चिड़ियों ने जब उन आदमियों को भागते हुए देखा, तो मारे खुशी के पागल होने लगीं। चूं–चूं, चीं–चीं और कांव–कांव के शोर से उन्होने पूरा जंगल सिर पर उठा लिया। उल्लू दादा चुपचाप मुस्कुरा रहा था। जब आदमी बहुत दूर निकल गए, तब साँप चुपचाप अपने बिल की तरफ चला गया। उल्लू दादा ने जब उसे जाते देखा तो बोला, ''ठहरो साँप भाई, जरा रूको।'' साँप रूक गया। फिर उल्लू दादा चिड़ियों से बोला, ''मैंने और साँप ने कल रात यह उपाय सोचा था कि साँप उन पेड़ काटने वालों को डराकर भगा देगा। तुम लोग कितनी नाराज थीं जब साँप तुम्हारे पड़ोस में रहने आया था और आज उसी साँप ने तुम्हारे पेड़ को कटने से बचा लिया। बोलो, अब तो दोस्ती करोगे ने तुम लोग साँप भाई से? यह तो एक दोस्त साँप है।''

और चिड़ियों ने भी चीं–चीं करके हामी भरी।

गिरिजा रानी अस्थाना

चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट प्रकाशन

कविताएँ

मैं आम हूँ

मैं आम का पेड़ हूँ
घर के पीछे रहता हूँ
मुझ पर आम आते हैं
बच्चे लूट कर खाते हैं
ज्यादा खाने वालों के
दाँत खट्टे करता हूँ
मैं आम का पेड़ हूँ।

दीपा, उम्र–7 वर्ष,
समूह–सागर

ज्योति, उम्र–6 वर्ष, समूह–खुशबू

मेरा काम

बस्ता लेकर जाते स्कूल
स्कूल जाकर पढ़ते हम
पढ़–पढ़ाकर घर को जाते
मम्मी हमको लेने आाती
घर जाकर खाना खाते
खाना खाकर टीवी देखते
पापा जब ऑफिस से आते
आइसक्रीम और बर्फी लाते
ये सब मेरा रोज का काम
तुम भी बताओ अपने काम

प्रियंका सैनी, आरती,
समूह–उजाला, उम्र–12 वर्ष

जितेन्द्र, कक्षा–8
राजकीय विद्यालय रामपुरा

अंकित, उम्र–10 वर्ष, समूह–संगम

रसगुल्लों की बारिश

ऊपर मेरा चंदा मामा।
उसने पहना बड़ा पजामा।
हवाओं के वेग से।
बारिश आई तेज से।
जेब उसकी फट गई।
जेब से निकली बर्फ।
लगे बरसने मोटे ओले।
दौड़े–दौड़े बच्चे आये।
रसगुल्ला समझ उन्हें उठाए।

बेनी प्रसाद शर्मा, शिक्षक,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

अंजली,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–रोशनी

बारिश

रिमझिम रिमझिम बारिश आई।
सोनू, मोनू नाच दिखाते।
दोनों भाई शोर मचाते।
सबको कहते आओ भैया।
तुम भी नाचो हम भी नाचे।
बादल की छलनी से निकला।
बिना पाईप का फव्वारा है।
बिजली का खर्चा न पानी का बिल।
आओ भीगें भागें दौड़ लगाएं।
हम सब मिलकर खुशी बनायें।

अर्चना प्रजापत, समूह–बादल,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

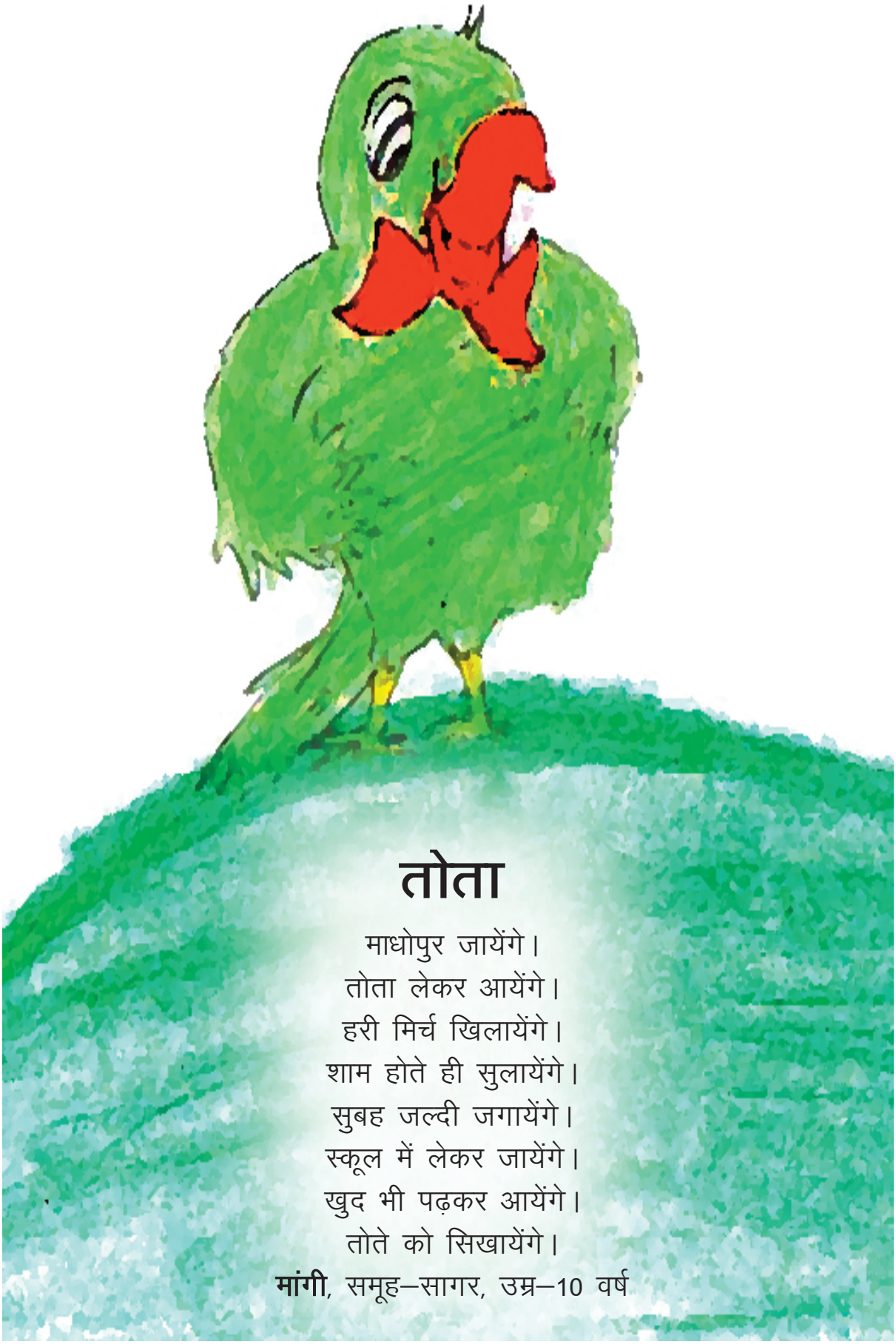

तोता

माधोपुर जायेंगे।
तोता लेकर आयेंगे।
हरी मिर्च खिलायेंगे।
शाम होते ही सुलायेंगे।
सुबह जल्दी जगायेंगे।
स्कूल में लेकर जायेंगे।
खुद भी पढ़कर आयेंगे।
तोते को सिखायेंगे।

मांगी, समूह–सागर, उम्र–10 वर्ष

एक लाख-लाख शुक्रिया

एक बुढ़िया थी। वह एक दिन अपने गाँव से बाजार सामान लेने जा रही थी। बाजार का रास्ता एक जंगल से गुजरता था। वह उस जंगल में से जा रही थी तो उसके पास अचानक एक खरगोश आया। खरगोश ने कहा, ''मुझे बचा लो, मेरे पीछे एक सियार पड़ा है, वह मुझे मार के खा जायेगा।'' बुढ़िया ने खरगोश को अपने थैले में छिपा लिया। कुछ दूरी पर चलते ही वह सियार वहाँ आ गया। बुढ़िया के हाथ में डण्डा देखकर सियार डर गया और उसे वह खरगोश भी कहीं नजर नहीं आया। उसने बुढ़िया से पूछा, ''क्या तुमने यहाँ किसी खरगोश को आते–जाते देखा है?'' बुढ़िया ने मना कर दिया तो वह सियार वहाँ से चला गया। बुढ़िया खरगोश को अपने साथ बाजार ले गई। वापस आते समय जंगल में खरगोश को छोड़ दिया। खरगोश बोला, ''बुढ़िया माँ, आपका लाख–लाख शुक्रिया, आज आपने मेरी जान बचाई है, नहीं तो वह सियार मुझे अपना भोजन बना लेता।''

रामघणी गुर्जर, उम्र–10 वर्ष,
समूह–सागर

काजल महावर,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–शीशम

शेर की दोस्त

एक शेर था। वह जंगल का राजा था। उससे सभी जानवर डरते थे। शेर ने सभी जानवरों को अपने वश में कर रखा था। शेर जो कहता था, जानवर वही करते थे। उसे कोई जानवर काम करने से मना नहीं करता। कोई उसे मना करता तो शेर उस जानवर को झपट्टा मारकर खा जाता था। इसलिए सभी शेर की बात मानते थे। एक दिन शेर ने सभी जानवरों को एक साथ बुलाया और कहा, ''तुम सब मेरे लिए शिकार करोगे, मैं तुम्हें शाम तक का वक्त दे रहा हूँ, मुझे शाम तक मोटा–ताजा जानवर चाहिए। अगर कोई जानवर नहीं लाया तो मैं उसको ही मारकर खा जाऊँगा। जो मेरे लिए अच्छा सा जानवर पकड़ कर लेकर आयेगा मैं उसे अपना खास दोस्त बनाऊँगा। तुम सभी जानवर अलग–अलग जगह फैल जाओ।''

सभी जानवर अलग–अलग जगह चल पड़ते है। थोड़ी ही देर बाद लोमड़ी को एक जंगली कुत्ता मिलता है। वह लोमड़ी उस कुत्ते को बहला–फुसलाकर शेर के पास ले आती है। कुत्ता शेर को देखते ही डर के मारे थर–थर काँपने लगता है। शेर कुत्ते को पकड़ कर गुफा में बंद कर देता है। शेर बहुत खुश होता है। शेर सभी जानवरों को बुलाता है। सभी जानवर शेर की आवाज सुनकर जल्दी से आ जाते हैं। शेर सभी से कहता है कि लोमड़ी मेरे लिए एक कुत्ता लाई है। सभी उसकी बात सुनकर बहुत खुश होते हैं। शेर कहता है कि आज से लोमड़ी मेरी खास दोस्त है, यह आज से मेरे साथ ही रहेगी। सभी जानवर अपने–अपने घर चले जाते हैं। शेर कुत्ते को खा जाता है। थोड़ी ही देर में रात हो जाती है। शेर भी सो जाता है लेकिन लोमड़ी को नींद नहीं आती है। वह एक तरकीब सोचती है। उसने गुफा के बाहर एक बहुत बड़ा गहरा गढ्ढा खोदा और उसमें पानी भर दिया और सूखे पत्ते डाल दिये। फिर लोमड़ी अपने दोस्तों के पास जाती है। सभी जानवर लोमड़ी को देखकर डर जाते हैं। लोमड़ी कहती है, मुझसे डरो मत। मैं तुम सब की अभी भी खास दोस्त ही हूँ। मैंने शेर को मारने की एक तरकीब निकाली है। लोमड़ी सारी बात जानवरों को बता देती है। सभी खुश हो जाते हैं। यह बात बता कर लोमड़ी वापस शेर की गुफा में जाकर सो जाती है। सुबह होती है। शेर गुफा से बाहर आता है तो उसे गढ्ढा दिखाई नहीं देता है और वह उसमें गिर जाता है। शेर निकलने का काफी प्रयास करता है लेकिन बाहर नहीं आ पाता। लोमड़ी यह खुशखबरी सभी जानवरों को बताती है। सभी जानवर यह खबर सुनकर खुश हो जाते हैं।

शिवानी, समूह–शीशम, राजकीय विद्यालय आवासन मण्डल

बंदर भाग गया

सुनील बैरवा,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–रिमझिम

एक जंगल में एक शेर रहता था। शेर बहुत ही होशियार था। एक दिन जंगल में एक बंदर आ गया। शेर बंदर को देखकर खुश हुआ। शेर बंदर को खाने के लिए धीरे–धीरे बंदर की तरफ जाने लगा। बंदर सुगबुगाहट की आवाज को पहचान गया। वह डर के मारे पेड़ पर चढ़ गया। शेर ने देखा कि बंदर एकदम गायब हो गया। शेर ने उसे चारों तरफ देखा पर बंदर नहीं दिखा। शेर उसी पेड़ के नीचे सो गया। बंदर पेड़ से नीचे ही नहीं उतर सका। जब सुबह हुई तो बंदर के हाथ से कुछ डाली टूटकर शेर के ऊपर गिर गई। शेर ने बंदर को देखा तो कहा, ओह! तो तुम पेड़ के ऊपर छिपे हुए थे। शेर बंदर को खाने के लिए पेड़ पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। कुछ ऊँचाई पर चढ़ते ही शेर गिर गया। गिरने से उसकी हड्डियाँ टूट गई। कुछ देर तक तो बंदर ने इंतजार किया। जब षेर नहीं उठा तो फिर बंदर उस पेड़ से उतर कर भाग गया।

महेन्द्र, उम्र–8 वर्ष, समूह–सागर

सपना

एक सोनू नाम का लड़का था। उसका परिवार बहुत गरीब था। सोनू का सपना था कि वह पढ़ाई–लिखाई करके अपने मम्मी–पापा का नाम रोशन करें। परन्तु उसके पापा के पास उसे स्कूल भेजने के लिए पैसे नहीं थे। सोनू अपने पापा से स्कूल जाने की जिद करता रहता था। परन्तु उसके पापा उसकी बातों को सुनते ही नहीं थे। सोनू ने ठान लिया था कि उसे स्कूल पढ़ने जाना है। एक दिन सोनू गाँव के सरकारी स्कूल में गया तो वहाँ देखा, एक लड़के के पापा स्कूल में उस लड़के का दाखिला करवा रहे थे। उसने उनसे पूछा, ''एडमिशन कैसे कराते हैं।''

मुरारी लाल शिक्षक

जब उसकी जानकारी पूरी हो गई तो घर जाकर उसने पापा को बताई और कहा सरकारी स्कूल में पढ़ने का कोई खर्च नहीं आता है। जरूरत की चींजे भी सरकार द्वारा मिल जाती हैं। गरीब और जरूरतमंद बच्चों को छात्रवृत्ति भी मिलती है। यह सब जानकर उसके पापा ने उसका एडमिशन सरकारी स्कूल में करवा दिया। बच्चे ने खूब मन लगाकर पढ़ाई की और जब भी स्कूल में कोई कार्यक्रम (26 जनवरी, 15 अगस्त) होते तो वह उनमें भाग लेता। उसे जो भी ईनाम व पैसे मिलते उन्हें घर आकर पापा को देता। धीरे–धीरे वह पास होता रहा और आगे बढ़ता रहा। जब उसकी स्कूल की पढ़ाई पूरी हो गई तो उसके पापा ने जमा पैसों से उसका एडमिशन कॉलेज में करवा दिया। कॉलेज के बाद उसकी अच्छी नौकरी लग गई और उसने अपने मम्मी–पापा का नाम रोशन किया। अब उसका एक अच्छी नौकरी करने का सपना पूरा हुआ।

सोनू गुर्जर, समूह–बरगद, उम्र–10 वर्ष

जंगल की सैर

एक बार जंगल के सारे जानवरों ने मिलकर पिकनिक पर जाने की योजना बनाई। इस पर सभी जानवरों ने अपने विचार देना शुरू किया। हाथी, शेर, मुर्गा, भालू, हिरन बोले, ''हम तो वहाँ क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी आदि खेलेंगे।''

मादा पशु बोले, ''हम सब आपके लिए भोजन तैयार करेंगे।''

छोटे बच्चे बोले, ''हम वहाँ मौज–मस्ती करेंगे।''

जितेन्द्र नायक उम्र–11 वर्ष,
समूह–वीर शिवाजी

अगले दिन सभी जानवर पिकनिक पर निकल गये। पिकनिक पर पहुँचते ही सभी जानवरों ने अपने पसंद के खेल शुरू कर दिये। मादा पशु जानवरों ने सभी के लिए भोजन तैयार किया। छोटे जानवरों ने अपनी माँ की मदद की। कुछ नर पशुओं ने भी खाना तैयार करने में उनकी मदद की तो कुछ मादा पशु भी खेलने के लिए चले गये। सभी ने खेलने के बाद खाना खाया। इसके बाद सभी ने आराम किया। फिर सभी ने घर वापस चलने की तैयारी शुरू की। सभी जानवर अपने जंगल में वापस पहुँच गये। तब हाथी दादा बोले, ''सभी जानवर आ गये हैं ना कोई रह तो नहीं गया है।''

तब माता खरगोश बोली, ''मेरा बेटा चिटकू वहीं रह गया है।''

उन सभी को चिन्ता होने लगी। रात भी होने लग गई थी। फिर देर रात में चिटकू घर वापस आया। तब जाकर सभी जानवर खुश हुए और अपने–अपने घर को चल दिये।

भूमिका, उम्र–9 वर्ष, समूह–बरगद

याद की धूप–छाँव में

काम बन गया

कार्तिक, कक्षा–2,
राजकीय विद्यालय अल्लापुर

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा संचालित विद्यालयों में बच्चों को अपने ज्ञान का निर्माण करने और उसे अपने दैनिक अनुभवों से जोड़ते हुए उपयोग करने के स्वाभाविक अवसर प्रदान किये जाते हैं। बच्चे स्वयं भी ऐसा करते रहते हैं।

ऐसा एक अनुभव मुझे पिछले सप्ताह हुआ जब मैं राजकीय विद्यालय दौलतपुरा से अपना काम करके वापस लौट रहा था। जब मैं बहरावंडा खुर्द कस्बे के सरकारी अस्पताल के पास से गुजर रहा था तो मुझे किसी ने जोर से आवाज लगाई ''ओ... गुरूजी ओ...।''

मैंने अपनी मोटर साईकिल को ब्रेक मारे और देखा तो सरकारी अस्पताल के गेट के पास खड़े बारह–तेरह साल के दो बच्चों ने मुझे इशारा किया। बच्चे जाने पहचाने लगे। इसलिए मैं अपनी गाड़ी खड़ी करके उनके पास चला गया। इनका नाम राजेश बैरवा और राजवीर बैरवा था जो उदय पाठशाला फरिया में कक्षा 7 के विद्यार्थी थे।

मैंने उनसे पूछा, ''आज तुम दोनों अस्पताल के गेट पर क्या कर रहे हो? कोई बीमार है क्या?''

बच्चों ने कहा, ''नहीं बीमार तो कोई नहीं है।''

''तो आप यहाँ क्या कर रहे हो?'' मैंने पूछा।

''हम बहुत देर से इधर–उधर चक्कर काट रहे हैं।''

बच्चों का अधूरा जवाब सुनकर मैंनें फिर कहा, ''क्यों क्या बात है? कोई काम भी तो होगा?''

बच्चों ने अपनी–अपनी थैलियों से कुछ प्रमाण पत्र निकाले और बोले, ''हमें छात्रवृत्ति का फार्म भरने के लिए आय प्रमाण पत्र बनवाना है। इसके लिए हमें इन पर किसी एक सरकारी डॉक्टर या वैद्यजी के हस्ताक्षर करवाने हैं। पर यहाँ दोनों ही मना कर रहे हैं।''

बात में बात जोड़ते हुए राजवीर ने कहा, ''वैद्यजी के पास गए तो बोले डॉक्टर के पास जाओ। डॉक्टर के पास जाये तो डॉक्टर कहता अभी टाईम नहीं अभी मरीजों को देखने का समय है फिर कभी आना।''

मैंने फिर कहा, ''तो अब तुम क्या करोगे? मैं कुछ करूँ? अगर भीड़ कम होगी तो डॉक्टर साहब जरूर कर देंगे।''

बच्चे थोड़े मुस्कुराते हुए बोले, ''कर तो हमने पहले ही दिया है।''

मुझे चिन्ता हुई और पूछा, ''क्या कर दिया है तुम दोनों ने?''

बच्चों ने अपना विश्वास बढ़ाते हुए एक दूसरे की तरफ देखा और कहा ''जब डॉक्टर ने मना किया तो हम उनकी शिकायत करने पुलिस चौकी में चले गये और थानेदार से उसकी शिकायत कर दी। थानेदार ने कहा, अबकी बार और डॉक्टर के पास जाओ, कहना थानेदार साहब ने भेजा है। हम डॉक्टर के पास जाने ही वाले थे कि आप दिखाई दे गये। अब आप बताओं हम क्या करें?''

मैनें कहा, ''तुम डॉक्टर के पास जरूर जाओ और सारी बातें डॉक्टर को बता दो।''

बच्चे बोले, ''गुरूजी डॉक्टर साहब गुस्सा तो नहीं करेंगे?''

मैनें कहा, ''गुस्सा करें तो दुबारा चौकी में चले जाना।''

बच्चे ''गुरूजी आप यहीं रूको हम अभी जाकर आते हैं।''

बच्चे अन्दर चले गये तो मैं भी खिड़की के पास आकर चुपके से दोनों बच्चों के आत्मविश्वास को देखने लगा कि बच्चे किस प्रकार से बात करते है। बच्चे तो बच्चे ही ठहरे। डॉक्टर के पास मरीजों की भीड़ लगी थी। दोंनो भीड़ में घुसकर रास्ता बनाते हुए डॉक्टर के पास पहुँचे और बेझिझक होकर बोले।

''डॉक्टर साहब हम पुलिस चौकी में जाकर आये हैं। थानेदार साहब ने कहा कि जाओ बच्चों डॉक्टर साहब से कह देना कि थानेदार साहब ने भेजा है। अब आप

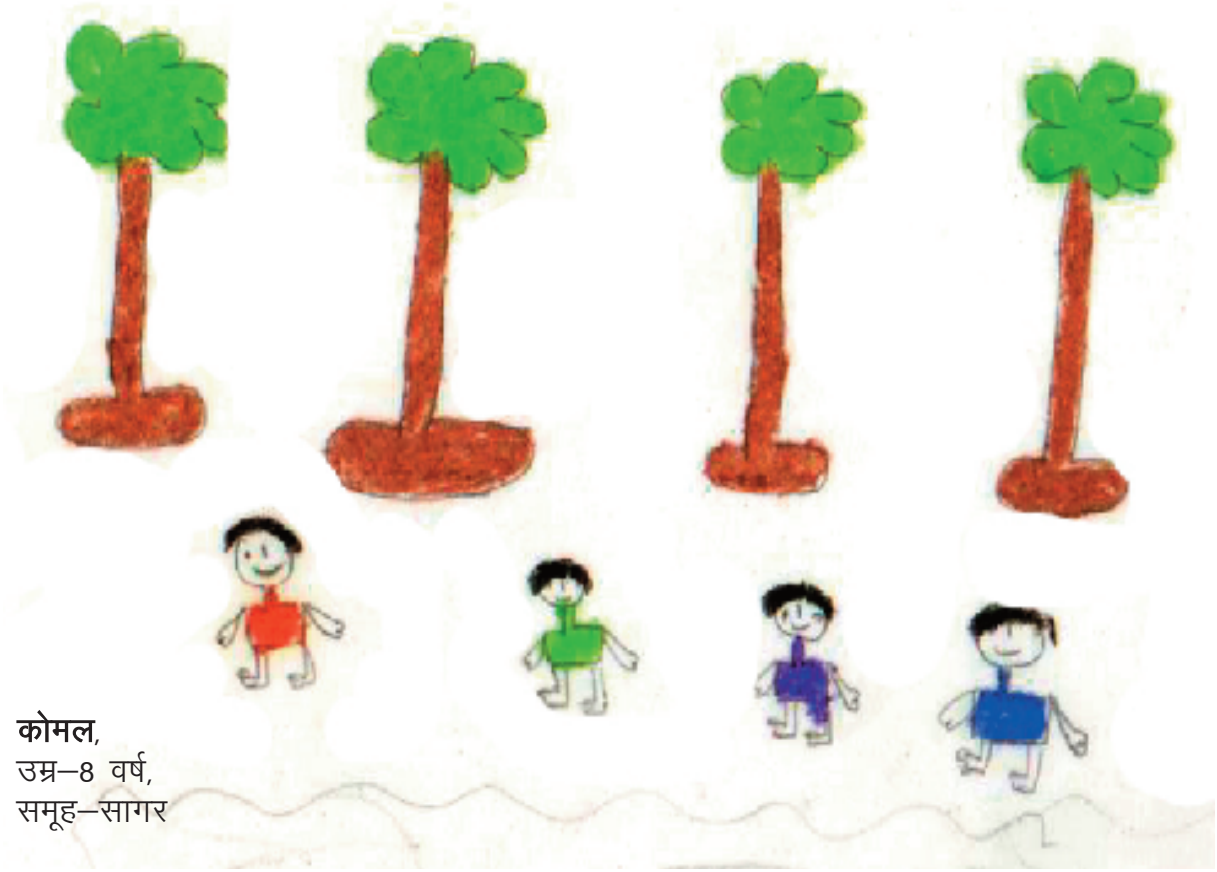

कोमल,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–सागर

हस्ताक्षर कर दीजिए नही तो हम लिखित में शिकायत दर्ज करवायेंगे।''

बच्चों ने धमाका कर दिया था। बस परिणाम आना बाकी था। अब डॉक्टर की बारी थी। डॉक्टर थोड़ा रोब में आया और कहा–

''तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई वहाँ जाने की?''

थोड़ी देर बाद उसने बच्चों की तरफ देखा और थोड़ा सा मुस्कुराते हुए कहा–

''बच्चों आपको इधर–उधर जाने के लिए किसने कहा? मैं तो मैं ही कर देता हस्ताक्षर। मेरे पास भीड़ लगी हुई थी इसलिए मैंने हस्ताक्षर नहीं किये। जाने से पहले एक बार मुझे तो कहकर जाते। ये लो कर दिए हस्ताक्षर। अब जाओ और फिर कभी इस तरह की शिकायत मत करना।''

बच्चों के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ उठी। वे तेजी से बाहर की तरफ निकले। मैं भी खिड़की से हटकर अस्पताल के गेट पर लौट आया। बच्चों के चेहरे सफलता की कहानी कह रहे थे। कुछ कहने जानने की तो जरूरत नहीं थी पर बच्चों को तो बताना ही था। आते ही कहने लगे।

''गुरूजी हमारा काम बन गया। अब आप जाओ हम भी घर जाते हैं।''

हेमराज बैरवा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

सौतेली माँ

एक लड़की थी। उसकी माँ उसे बचपन में ही छोड़कर चली गई थी, मतलब मर गई थी। वह अपने पिताजी के पास ही रहती थी। एक दिन पिताजी ने दूसरा विवाह कर लिया और वह अकेली हो गई। पिताजी उसकी सौतेली माँ के साथ रहने लगे और उसकी सौतेली माँ अपने साथ उसकी दो बहनों को लेकर आई थी। वो भी उन्हीं के साथ ही रहती थी। सौतेली माँ लड़की के साथ बहुत बुरा व्यवहार करती थी। घर का पूरा काम वह उस लड़की से ही करवाती थी। उस लड़की की घर में एक बिल्ली दोस्त थी। जब कभी काम से फ्री होती थी पास में अलाव जलाकर बिल्ली से ही बातें करती थी। क्योंकि घर में कोई उससे बात नहीं करता था। एक दिन राजा के सैनिक उनके घर पर निमंत्रण देने आये और कहा कि ''राजा के बेटे की सगाई है जिसमें सब गाँव वालों की लड़कियों को बुलाया है।'' सौतेली माँ ने अपनी दोनों बेटियों को अच्छे तरीके से सजा–धजा के तैयार किया। उस लड़की ने भी कहा कि ''माँ मुझे भी राजा के दरबार में अपने साथ ले चलो।'' तो उसने कहा कि ''तू वहाँ जाकर क्या करेगी? घर का काम कौन करेगा?'' इस तरह वह घर पर ही रह जाती है और अपना काम करने के बाद आग जलाकर बैठ जाती है। तभी अचानक उस आग से एक परी जैसी औरत बाहर निकलती है। वह लड़की बोलती है कि ''तुम कौन हो?'' उस परी ने

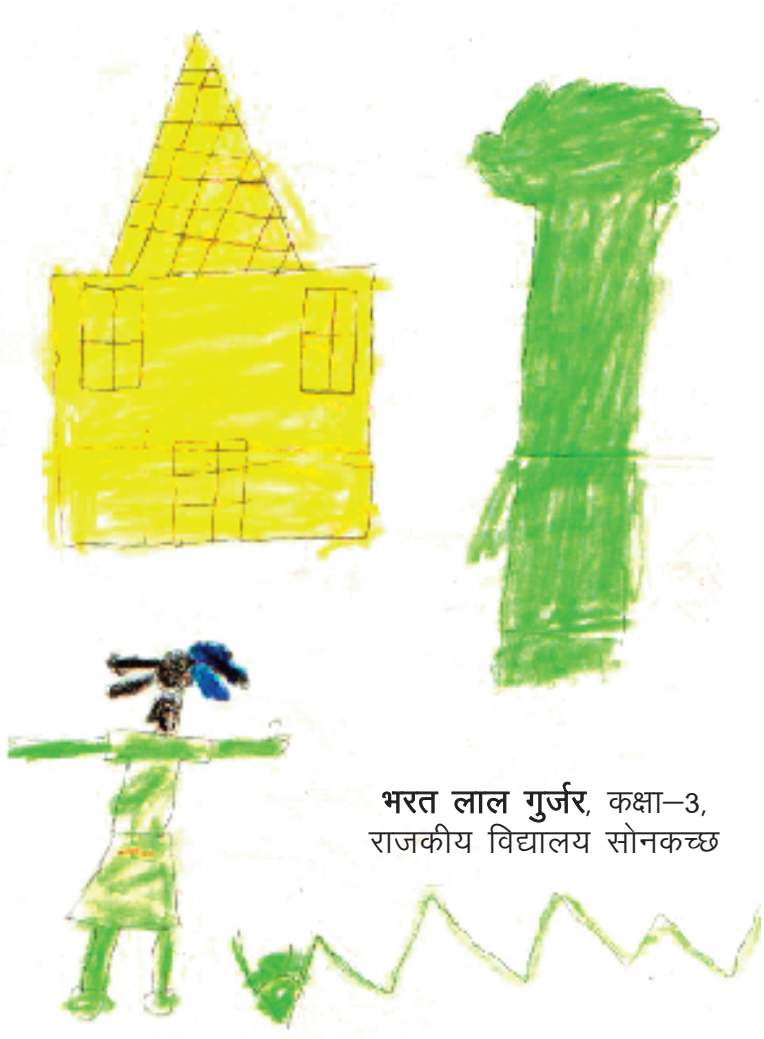

भरत लाल गुर्जर, कक्षा–3,
राजकीय विद्यालय सोनकच्छ

कहा कि ''मैं तुम्हारी माँ हूँ। तुम्हें राजा के दरबार में भेजने आई हूँ।'' परी ने कहा कि ''रसोई में जाकर एक कद्दू लेकर आओ'' और बिल्ली से कहा कि ''सात चूहे पकड़कर लाओ।'' वह कद्दू ले आई व बिल्ली सात चूहे पकड़कर ले आई। परी ने अपने जादू से कद्दू को रिक्शा बना दिया व सात चूहों में से 1 चूहे को घुड़सवार व 6 चूहों को घोड़ा बना दिया। परी ने उस लड़की को एक सुन्दर राजकुमारी बना दिया। उस लड़की ने कहा कि ''अगर मुझे राजा के बेटे के साथ नाचना पड़ा तो मुझे तो नाचना भी नहीं आता है।'' उस परी ने उसे अपने जादू से नाचने वाले जूते पहना दिये। इसके बाद परी ने कहा कि ''यह जादू रात के 12:00 बजे तक ही असरदार रहेगा। इस बात का ध्यान रखना।'' इसके बाद वह लड़की रिक्शे में बैठकर राजा के महल में पहुँच गई। सभी लोग कहने लगे कि यह राजकुमारी कहाँ से आई है? ऐसी सुंदर लड़की तो हमने आज तक नहीं देखी है। पास ही में उसकी सौतेली माँ व उसकी दो सौतेली बहनें खड़ी थी। लेकिन वे भी उस लड़की को पहचान नहीं पाई। राजा का बेटा भी उसको देखकर हैरान रह गया। उसने अपने पिताजी से कहा मैं इसी लड़ी से शादी करना चाहता हूँ। राजा के बेटे ने उससे कहा कि ''मैं तुम्हारे साथ नृत्य करना चाहता हूँ।'' लड़की उसके साथ नाचे में इतनी व्यस्त हो गई कि उसे समय का ध्यान ही नहीं रहा। जब उसे पता चला कि 12:00 बजने में केवल 5 मिनट ही शेष बचे हैं तो वह जल्दी से महल से बाहर आ गई। बाहर आते समय जल्दी के कारण उसके एक पैर का जूता महल की सीढ़ियों पर ही रह गया व उसका सुन्दर रूप भी गायब हो गया। अब वापस आते समय उस लड़की को कोई पहचान नहीं पाया। राजा के लड़के ने उस जूते को गाँव की सभी लड़कियों को पहनाया परन्तु वह जूता किसी के भी पैर में नहीं आया न ही उस जूते का जोड़ीदार एक और जूता किसी के पास मिला। एक दिन राजा के सैनिक उस लड़की के घर के आगे से निकल रहे थे। एक सैनिकों ने लड़कियों को देखा तो उन्हें अपने साथ लाया जूता पहनाने को कहा। सौतेली माँ ने उसकी बहनों के पैरों में नहीं आने के बाद भी जबरदस्ती वह जूता पहनाने की कोषिश कर रही थी। सौतेली माँ ने जूतों को पहनाने की बहुत कोशिश की परन्तु वे उनके पैर में नहीं आए। फिर जब तीसरी लड़की को वे जूते पहनाये गये तो उसके पैर में बिल्कुल सही आ गये। सैनिकों ने जब यह सब देखा तो वे लड़की, उसकी बहनों एवं सौतेली माँ को राजा के महल में ले गये। महल में राजा के बेटे ने तुरन्त ही उस लड़की को पहचान लिया। फिर दोनों की शादी कर दी गई। अब उस लड़की का जीवन आनन्दमय हो गया।

स्रोत : **शैलेन्द्र सिंह**, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

अर्चना प्रजापत,
उम्र–13 वर्ष,
समूह–बिजली

1. काका के एक कान, काकी के दो कान।
2. दबी आई, दबी गई।
3. रंग बिरंगा बदन है इसका, कुदरत का वरदान मिला। इतनी सुंदरता पाकर भी दो अक्षर का नाम मिला। यह वन में करता है शोर, इसके चर्चे हैं हर ओर।
4. नोच–नोच कर खाता मांस, जीव है दुनिया का ये खास, दो अक्षर का छोटा नाम लेकिन इसका मोटा नाम, उड़ता रहता सुबह–शाम।
5. सोने को पलंग नहीं, न ही महल बनाए, एक रूपया पास नहीं, फिर भी राजा कहलाए।

पपीता गुर्जर, समूह–खूशबू, उम्र–10 वर्ष
एवं **शैलेन्द्र सिंह**, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

हीहीही-ठीठीठी

1. चोर बंदूक तानते हुए– जिंदगी चाहते हो तो अपना पर्स मेरे हवाले कर दो।
   आदमी – यह लो।
   चोर – कितने मूर्ख हो तुम, मेरी बंदूक में तो गोली ही नहीं थी।
   आदमी – पर्स में भी कहाँ रूपये थे।

2. एक भाई साहब पेड़ पर उल्टा लटक रहे थे। रमेश ने पूछा किस खुशी में लटके हो भाई।
   आदमी ने कहा – सिरदर्द की गोली खाई है, कहीं पेट में न चली जाए।

शैलेन्द्र सिंह राजावत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

आरती,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–रोशनी

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

हाथी फल–फूल खाने लिए एक पेड़ के पास गया। तभी वहाँ एक चिड़िया आई। चिड़िया बोली, ''इस पेड़ पर मेरा घौंसला है। तुम मेरे घौंसले को गिराना मत, नहीं तो उसमें रखे मेरे सारे अण्डे नीचे गिर कर टूट जायेंगे। यह सुनकर हाथी ने जानकर उस पेड़ की डाली को हिलाया तो चिड़िया के अण्डे नीचे गिर गये। यह देखकर चिड़िया रोने लग गई। उसने सोचा हाथी इतना बड़ा जानवर है, फिर भी इसने मेरे अंडे गिरा दिए। अब मैं इसको कैसे सबक सिखाऊँ?....

विष्णु प्रजापत, *कक्षा–4, उम्र–9 वर्ष, राज.प्राथ.विद्या. बोदल द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

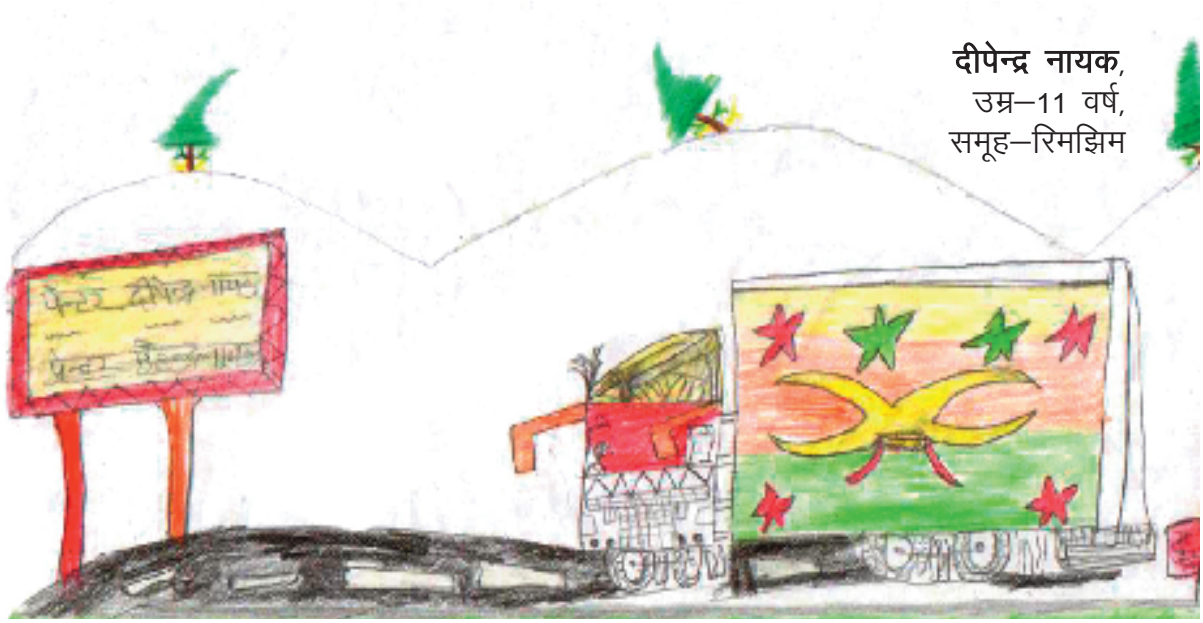

दीपेन्द्र नायक,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–रिमझिम

आज दादा आयेगा
एक केला लायेगा...

पवन गुर्जर, *समूह–सागर, उदय पाठशाला गिरिराजपुरा द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

पहेलियों के ज़वाब –

1. तवा कड़ाई 2. चूमड़ी 3. मोर 4. गिद्ध 5. शेर

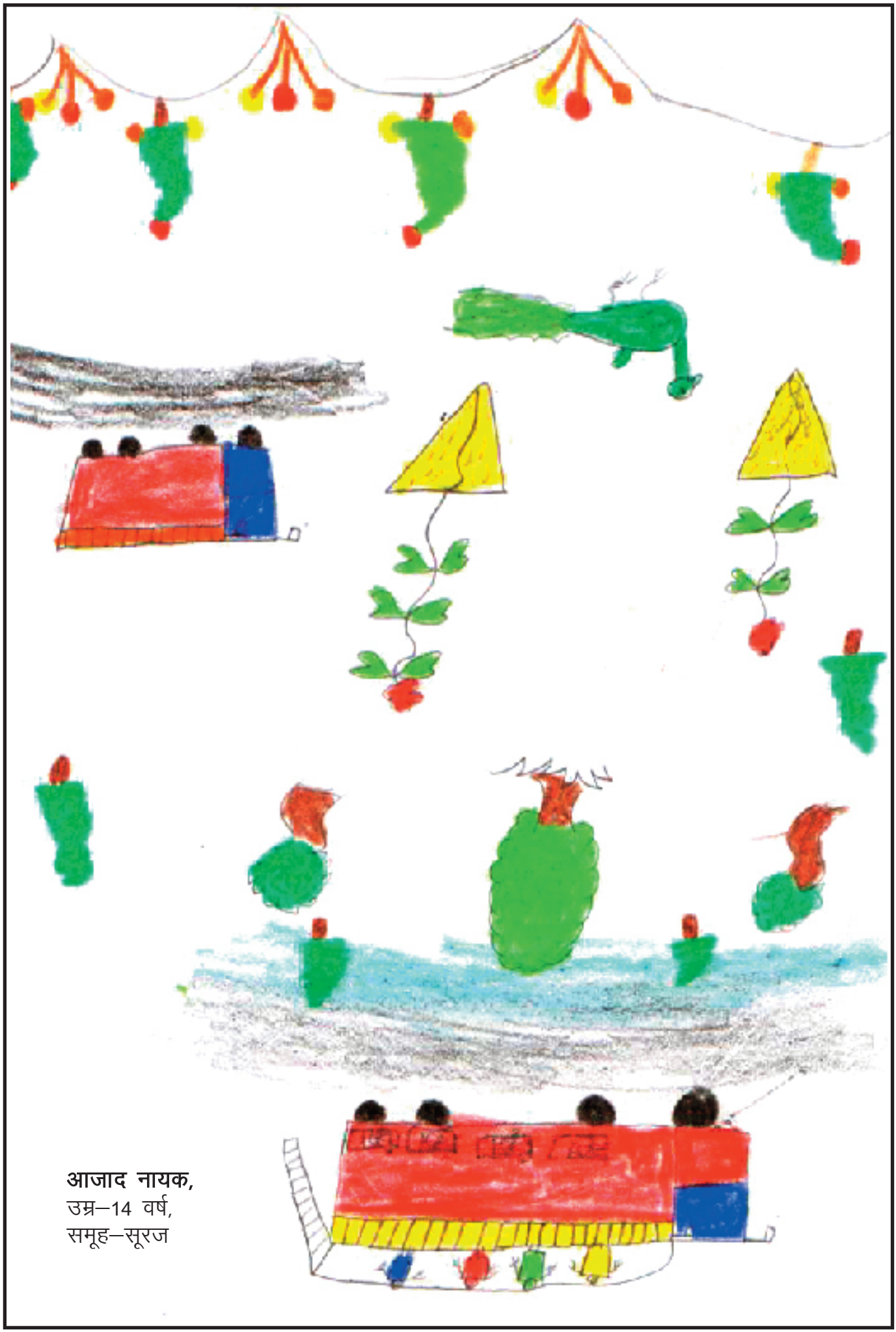

आजाद नायक,
उम्र–14 वर्ष,
समूह–सूरज